राज्य अध्याय 11

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज़ सुनने और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।***

अपने समूह और परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित इस अध्याय को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **2शमूएल 2,5,6 और 7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (2शमूएल 2,5,6 और 7) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख पद)*** **(5) रोमियों 3:28**

दो–दो करके ***समीक्षा करें।***

(3) रोमियों 3:28। इसलिये हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टान्त)*** **छिपे हुए खजाने और अनमोल मोती का दृष्टान्त**

मत्ती 13:44 में "छिपे हुए खजाने का दृष्टांत छुपे"
और मत्ती 13:45–46 में ''अनमोल मोती का दृष्टांत''
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कीमत के विषय में हैं।

''दृष्टांत'' एक पृथ्वी पर कि कहानी स्वर्गीय अर्थ के साथ होती है। यह एक सच्चे जीवन की कहानी या उदाहरण है जिसे आत्मिक शिक्षा देने के लिया तैयार किया जाता है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने के लिए और लोगों का उनकी वास्तविक स्थिति और नवीनीकरण की आवश्यकता से सामना कराने के लिए सामान्य और रोजमर्रा की घटनाओं को उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन दृष्टांतों का अध्ययन करने के छः दिशानिर्देशों के द्वारा करेंगे। (देखें नियमावली 9, पूरक 1)।

क. छिपे हुए खजाने का दृष्टांत

पढ़ें मत्ती 13:44।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी समझें।

परिचय। दृष्टांत को अंलकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिये हम पहले कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। इस कहानी के जीवन के लिए वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

यह चित्र एक ऐसे व्यक्ति का है, जो खेत में खुदाई करते समय, *अचानक* जमीन में छिपे एक खजाने तक पहुँच गया। कहानी हमें यह नहीं बताती की वह खजाना वहाँ क्यों दबाया गया था या किसने वह खजाना वहाँ दबाया था। लेकिन चोरी और युद्ध के कारण अक्सर लोगों के पास अपनी कीमती चीजों को रखने के लिए जगह नहीं होती थी। तो किसी समय किसी ने अपनी कीमती संपत्ति का भाग एक संदूक में डाल कर उस खेत में कहीं दबा दिया। यह विशेष व्यक्ति किसी को इस खजाने के बारे में सूचित करने से पहले मर गया होगा।

अब किसी और के पास इस खेत का स्वामित्व है। खुदाई करने वालें को अचानक यह खजाना मिला। कहानी हमें यह नहीं बताती कि क्यों वह उस खेत में खुदाई कर रहा था जो उसका नहीं था। एक संभावना यह थी कि उसने बटाईदार के रूप में उस खेत को किराए पर लिया था। वह व्यक्ति उस खजाने को चोरी नहीं करना चाहता था। उसने महसूस किया कि खजाने के कानूनी स्वामित्व का दावा करने के लिए उसे पहले वह खेत खरीदना होगा। इसलिए उसने खजाने को फिर से ढंक दिया। उस खेत को खरीदने के लिए उसके पास जो कुछ भी उसने वह सब कुछ बेच दिया। उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि उसे खरीदने के लिए उसके पास जो कुछ भी था वह सब कुछ खर्च हो गया, वह उस खजाने को प्राप्त करने के लिए इतना खुश था।

---

2. करीब के संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय दें। दृष्टांत की "कहानी" के संदर्भ में "समायोजन" और "स्पष्टीकरण या लागूकरण" शामिल हो सकता है। दृष्टांत का समयोजन दृष्टांत को बताने के अवसर के विषय में बता सकता हैं, या दृष्टांत को बताने के समय की परिस्थिति के बारे में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से पहले पाय जाता है और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 13:36-43 में निहित है।

गेहूँ के बीच जंगली बीज के दृष्टांत के स्पष्टीकरण के तुरंत बाद यीशु मसीह ने यह दृष्टांत कहा। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह दृष्टांत भीड़ के लिए नहीं बल्कि केवल शिष्यों के लिए बोला गया था। इस दृष्टांत का उद्देश्य प्रकट करना था छिपाना नहीं (मत्ती 13:10-13)!

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:44 में निहित है।

(3) स्पष्टीकरण या लागूकरण।

यीशु दृष्टांत की व्याख्या नहीं करते थे। दृष्टांत की व्याख्या स्वयं कहनी और उसके संदर्भ से की जानी चाहिए। (भाग ग)।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने किसी विशेष आत्मिक महत्व को बताने के लिए दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण का इरादा नहीं किया था। दृष्टांत की कहानी में प्रासंगित विवरण वे हैं जो दृष्टांत के पाठ या मुख्य विषय या फिर केंद्रीय बिंदु को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आध्यात्मिक महत्व को श्रेय नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत में कौन सा विवरण वास्तक में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

परमेश्वर का राज्य। सामान्य तौर पर परमेश्वर का राज्य अनंत काल से अनंत काल तक हर एक पर और सभी चीजों के ऊपर परमेश्वर का राज या शासन है (भजन 24:1; 145:13)। विशेषरूप से, परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का शासन है (मत्ती 28:18)। परमेश्वर का राज्य मसीह के छुटकारे के पूर्ण किए गए कार्य (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा उस कार्य के लागूकरण (रोमियों 14:17) पर आधारित है। परमेश्वर का राज्य विश्वासियों के हृदयों में पहचाना जाता है (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में क्रियाशील होता है। परमेश्वर का राज्य चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट होता हैः शुरूआत से अंत तक विश्वासी के पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), पृथ्वी पर विश्वासियों का एक कलीसिया के रूप में गठन (मत्ती 16:18-19), मानव समाज के प्रत्येक पहलू में विश्वासियों के भले काम (मत्ती 25:34-40), और अंत में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर छुटकारा पाए हुए संसार या नए स्वर्ग और पृथ्वी में, (1कुरिन्थियों 15:24-26)।

इस प्रकार, परमेश्वर का राज्य प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है जब एक व्यक्ति उद्धार पाता है, मसीही मंडली का एक सक्रिय सदस्य बन जाता है (ग्रह कलीसिया या ग्रह संगति) और परमेश्वर के राज्य में कई सम्भावित सेवकाईयों में से एक सेवा करता है। जब भी यीशु मसीह ने कहा कि, ''परमेश्वर का राज्य *समान* है.....'' वह हमें सिखाना चाहते थे कि परमेश्वर के शासन काल में पृथ्वी पर इस समय क्या होता है और निश्चित रूप से तब क्या होगा जब यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय परमेश्वर का शासन अपने अंतिम चरण में प्रकट होगा। अंतिम न्याय के दिन दृष्टांतो में वर्णित घटनाएँ निश्चित रूप से पूरी होंगी। इसका अर्थ है कि वर्तमान समय में रहने वाले लोग दृष्टांतों में वर्णित घटनाओं में शामिल हैं! यीशु मसीह के प्रत्येक दृष्टांत में आज मेरे और आपके लिए एक संदेश है!!!

खज़ाना। इस दृष्टांत में खजाने का विशेष महत्व है क्योंकि यह *परमेश्वर के राज्य और उसके महत्वपूर्ण मूल्य* का प्रतिनिधित्व करता है।

खेत। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि ''खेत'' बाइबल का प्रतिधित्व करता है, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि बाइबल पढ़ना परमेश्वर के राज्य की खोज करने का एक मात्र तरीका नहीं हो सकता! उदाहरण के लिए प्रेरित पौलुस ने जब परमेश्वर का राज्य पाया तब वह बाइबल नहीं पढ़ रहा था। जब परमेश्वर

किसी पापी की अगुवाई परमेश्वर का राज्य खोजने या उद्धार पाने के लिए करते हैं, तब वह हर प्रकार के तरीकों का प्रयोग करते हैं। इसलिए ''खेत'' कहानी का एक भाग मात्र है और यह विवरण इसका कोई अन्य विशेष महत्व नहीं बताता।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय संदेश) या तो स्पष्टीकरण या लागूकारण में से या फिर स्वयं कहानी ही से मिलता है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतो को समझाया या लागू किया, हम जानते कि हमें दृष्टातों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य विषय (संदेश), एक मुख्य पाठ, एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:44 में छिपे हुए खजाने का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कारने की कीमत'' के बारे में एक दृष्टांत है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''परमेश्वर का राज्य एक अनमोल खजाने के समान है कि जो व्यक्ति इसे प्राप्त करना चाहता है वह इसे प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ छोडने को तैयार है जो इसे प्राप्त करने में बाधा डाल सकता है।''

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य हर प्रकार के बलिदान के लायक है। खेत में छिपा खजाना खेत के चुकाए गये मूल्य से कहीं अधिक कीमती है। ''परमेश्वर का राज्य'' एक विश्वासी के हृदय और जीवन में परमेश्वर का शासन है। ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश'' करने का अर्थ मसीह में अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार पाना है (मरकुस 10:24-26; प्रेरितों 16:31) और इस प्रकार किसी का अपने जीवन को परमेश्वर के शासन के प्रति सौंपना देना है। परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करना या परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना किसी भी अन्य वस्तु की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान है।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य के विषय में यीशु मसीह की शिक्षाओं की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। यह उद्धार के लिए बहुत आवश्यक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के इच्छुक हैं, जो यीशु मसीह के लिए अपना और अपने सम्पूर्ण जीवन का समर्पण करना है।

---

5. इस दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो से करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, बाइबल के सभी दृष्टांतों का सत्य बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्यों के समानांतर या विपरीत है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ खोजने की कोशिश करें ताकि दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो सकें। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। कैसे यह लेखांश परमेश्वर के राज्य की खोज और उस में प्रवेश की व्याख्या

करते हैं ?
ध्यान दें।

यूहन्ना 1:45–51। नतनएल ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब कि जब फिलिप्पुस ने उसे बताया की हमें मसीहा मिल गया है। सबसे पहले नतनएल को संदेह हुआ और उसने यह नहीं सोचा था कि गलील से कोई अच्छी वस्तु भी निकल सकती है। फिलिप्पुस ने उससे कहा, ''चल कर देख ले''। जब यीशु ने नतनएल से कहा इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने तुझे देखा था, तब उसे एहसास हुआ कि यीशु मसीहा है। नतनएल ने यीशु मसीह का अनुयायी बनने के लिए *अपने संदेह और अविश्वास को छोड दिया।* उसके लिए यह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

यूहन्ना 4:1–40। सामरी स्त्री ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब कि जब यीशु उस स्त्री से कुएँ पर मिलें। पहले, उसने चर्चा के विषय को बदलकर अपने पापमय जीवन के बारे में सत्य को नजरअंदाज कर दिया। लेकिन जब यीशु ने उसे बताया कि वह मसीहा है, अब वह अपने वास्तविक पापी जीवन से भाग नहीं सकती थी। सामरी स्त्री ने यीशु समीह का अनुयायी होने के लिए *अपने पिछले पापमय जीवन के प्रगट होने के डर और शर्म को छोड़ दिया।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

यूहन्ना 9 अध्याय। जन्म के अंधे व्यक्ति ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब की जब यीशु ने उसके अंधेपन को ठीक किया। पहले, वह एक यहूदी और आराधनालय का सदस्य रहा था। यहूदी अनुमान लगा रहे थे कि वह अंधा था क्योंकि या तो उसने या उसके माता–पिता ने कुछ पाप किए थे। लेकिन जब यीशु ने कहा कि वह इसलिए अंधा है कि परमेश्वर का काम उसके जीवन में प्रगट हो, तब उसे एहसास हुआ कि यीशु जगत की ज्योति है। यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए *वह अंधा व्यक्ति उस देश के धार्मिक अगुवों के द्वारा अपमानित और आराधनालय से बाहर निकाले जाने के लिए भी इच्छुक था।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कारने का मूल्य था।

प्रेरितों 9:1–19; फिलिप्पियों 3:7–9।
प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के खजाने की खोज तब कि जब यीशु व्यक्तिगत रूप में उससे दमिश्क के मार्ग पर मिले। पहले, पौलुस ने मसीहियों को जेल में डालकर और उन्हें मृत्यु दंड देने के विषय मे अपना मत देकर उन्हें सताया। लेकिन जब उसका सामना यीशु मसीह से हुआ, तब उसे महसूस हुआ कि वह स्वयं एक बहुत बुरा पापी है और यीशु मसीह ही जगत का उद्धारकर्ता और मसीहा है। यीशु मसीह का अनुयायी बनने के लिए *प्रेरित पौलुस तुरन्त इस्त्राएल में फरीसी होने के अपने ऊँचे पद और संभवतः माहसभा का सदस्य होने के पद को त्यागने का इच्छुक था।* उसने अपना सताव बंद कर दिया और यीशु मसीह का पक्ष लिया और अपने लोगों और अन्य लोगों को सुसमाचार प्रचार किया। यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

प्रेरितों 16:25–34। फिलिप्पी में जेल खाने के दरोगा ने परमेश्वर के राज्य की खोज तब कि जब उसने देखा की एक भूकंप ने जेल के दरवारे खोल दिए है। पहले, वह स्वयं को मारना चाहता था, लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि एक भी कैदी भागा नहीं था, तब वह जानना चाहता था कि वह उद्धार कैसे प्राप्त कर सकता है। यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए *वह दरोगा जो सही था वह*

करने के लिए और खुले तौर पर अपने कैदियों के घावों और उनकी जरूरतों की देखभाल करने के लिए इच्छुक था। यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कीमत थी।

ख. अनमोल मोती का दृष्टांत

पढ़ें। मत्ती 13:45-46।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

यह चित्र एक व्यपारी का है जो अनमोल मोती की खोज में था। मोती बहुत कीमती होते हैं। केवल धनी व्यक्ति ही उन्हें खरीद सकते हैं। विशेषरूप से जो मोती फारस की खाड़ी या हिन्द महासागर से आते हैं वह बहुत महंगे होते है, और एक औसत व्यक्ति की खरीद से बहुत दूर होते हैं। एक व्यापारी था जो अब तक के खरीदे गए अपने मोतियों से संतुष्ट नहीं था। इसलिए उसने सबसे श्रेष्ठ मोती की हर जगह तलाश की। अंत में एक दिन उसकी तलाश सफल हुई। उसे एक बहुत अनमोल मोती मिला। व्यापरी इस मोती को प्राप्त करनर चाहता था। इसलिए उसने उस मोती को खरीद लिया। लेकिन ऐसा करने के लिए उसे अपन सब कुछ बेचना पड़ा।

---

2. करीब के संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 13:36-43 में पाया जाता है।

गेहूँ के बीच जंगली बीज के दृष्टांत के स्पष्टीकरण के तुरंत बाद यीशु मसीह ने यह दृष्टांत कहा। इसलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह दृष्टांत भीड़ के लिए नहीं बल्कि केवल शिष्यों के लिए बोला गया था। इस दृष्टांत का उद्देश्य प्रकट करना था छिपाना नहीं (मत्ती 13:10-13)!

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:4-46 में निहित है।

(3) स्पष्टीकरण या लागूकरण।

यीशु दृष्टांत की व्याख्या नहीं करते थे। दृष्टांत की व्याख्या स्वयं कहनी और उसके संदर्भ से की जानी चाहिए।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत में कौन सा विवरण वास्तक में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

मोती खोजने वाला व्यापारी। "व्यापारी" इस दृष्टांत में आवश्यक विवरण है, क्योंकि वह *परिश्रमपूर्वक* परमेश्वर के राज्य की *खोज करने वाले व्यक्ति* का प्रतिनिधित्व करता है। वह किसी भी ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने जीवन में सर्वोत्तम प्राप्त करने के लिए परिश्रम करता है और जब वह

उसे मिल जाता है तो वह उसे प्राप्त करने के लिए आपना सब कुछ देने के लिए तैयार हो जाता है।

मोती। "मोती" *परमेश्वर के राज्य* और उसके मूल्य को दर्शाता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है। अन्य बाइबल लेखांशो के अनुसार "मोती" कुछ मूल्यवान और पवित्र चीजों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उदाहरण के लिए, मत्ती 7:6 में, यीशु ने अपने सुनने वालों को चेतावनी दी, "अपने मोती सुअरों के आगे मत डालों (ये वह लोग हैं जो मोती के मूल्य को नहीं समझते) ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।" यीशु ने लोगों को सिखाया की उन लोगों पर यीशु मसीह के राज्य के सुसमाचार की घोषणा को व्यर्थ न करें जो लोग लगातार उनके प्रचार को खारिज करते हैं (मत्ती 10:14-15,23)। और पौलुस ऐसे प्राचीन को नियुक्त करने विषय में चेतावनी देता है जो योग्य नहीं (1तीमुथियुस 3:1-7)।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:45-46 में अनमोल मोती का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के मूल्य" के विषय में एक दृष्टांत है।

दृष्टांत का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है। "परमेश्वर का राज्य इतना कीमती है कि एक व्यक्ति जो इसे प्राप्त करना चाहता है, वह इसे प्राप्त करने के लिए वह सब छोडने के लिए तैयार है जो इसके साथ असंगत हो सकता है।"

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश का मूल्य हर बलिदान के योग्य है। अनमोल मोती का मूल्य उससे कहीं अधिक है जो कुछ व्यापारी के पास है। परमेश्वर का राज्य इस बात की पहचान है कि जीवन और हृदय में परमेश्वर का शासन या स्वामित्व ही सर्वोच्च है। "मैंने परमेश्वर से कहा, 'तू ही मेरा प्रभु है, तेरे सिवा मेरी भलाई कहीं नहीं'।" (भजन 16:2)। "स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।" (भजन 73:25)। "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश" करने का अर्थ मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार पाना और इस प्रकार परमेश्वर के प्रभुत्व के प्रति अपने जीवन को समर्पित करना है।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य के विषय में यीशु मसीह की शिक्षाओं की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। यह उद्धार के लिए बहुत आवश्यक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के इच्छुक हैं, जो यीशु मसीह के लिए अपना और अपने सम्पूर्ण जीवन का समर्पण करना है। इस प्रकार वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।

---

5. इस दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो से करें।

खोजें और चर्चा करें। कैसे यह लेखांश परमेश्वर के राज्य की खोज और उस में प्रवेश की व्याख्या करते हैं?

ध्यान दें।

मरकुस 10:17–27। धनवान युवक ने परमेश्वर की व्यवस्था को बनाए रखने की बहुत कोशिश की थी, फिर भी उसे पता नहीं था कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए उसे क्या करना चाहिए! जब यीशु ने उससे कहा कि अपनी सारी सम्पत्ति बेच कर कंगालों को दान कर दे और यीशु का अनुयायी बन जा, तो वह यीशु से फिर गया। *यह धनी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति छोड़ने के लिए तैयार नहीं था जो उसके और उसके यीशु समीह का चेला बनने के बीच खड़ी थी।* इसलिए यीश ने कहा, "धनवान का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है।"

प्रेरितों. 8:26–38। इथियोपिया के अधिकारी ने जीवित परमेश्वर की आराधना करने के लिए इथियोपिया से यरूशलेम तक की लंबी, कठिन और खतरनाक यात्रा की। उसने बाइबल में खोज करने के बाद परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को खोज निकाला। वह यशायाह 53 पढ़ रहा था। जब फिलिपुस ने उसे सुमाचार सुनाने के लिए बाइबल के उसी भाग से शुआत की, तब उसने विश्वास किया। *बाइबल पढ़ने के कारण जिसके द्वारा वह यीशु मसीह का अनुयायी बन सका वह सरकारी अधिकरी अपने उच्च राजनैतिक पद को खतरे में डालने के लिए तैयार था।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

प्रेरितों. 10:1–5, 30–36। पलटन के सूबेदार कुरनेलियुस ने परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को पुराने नियम के धर्म में प्रसन्नता से खोजते हुए पाया। वह प्रार्थना किया करता था और गरीबों को दान दिया करता था। जब पतरस ने उसे उसके घराने और मित्रों सहित सुसमाचार प्रचार किया, उसने यीशु मसीह पर विश्वास किया। *यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए इस सूबेदार ने अपने पलटन का सूबेदार होने के उच्च पद को बाइबल का संदेश स्वीकार करने के कारण खतरे में डाला।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

प्रेरितों. 16:14। बैंगनी कपड़ो की व्यापारी लुदिया ने परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को पुराने नियम के धर्म में प्रसन्नता से खोजते हुए पाया। जब पौलुस और उसके साथी उससे और दूसरी स्त्रियों से बात करने लगे जो वहाँ थी तब वह नगर के बारह नदी के किनारें प्रार्थना स्थल पर बैठी थी। परमेश्वर ने पौलुस के संदेश के प्रति उसके हृदय को खोला। *यीशु मसीह का अनुयायी होने के लिए यह व्यापारी औरत अपने व्यापार और व्यवसाय को जोखिम में डालने के लिए तैयार थी।* यह उसके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मुल्य था।

प्रेरितों. 17:10–12। बिरीया में यहूदियों और यदूदी धर्म में परिवर्तित हुए अन्यजातियों ने परमेश्वर के राज्य के अनमोल मोती को तब पाया जब वे एक दूसरे के साथ नए नियम के संदेश की चर्चा उत्सुक्ता के साथ पुराने नियम में करते हैं। पौलुस ने उन्हें परमेश्वर का वचन प्रचार किया उसके बाद वे कई दिनो तक प्रतिदिन पवित्र शास्त्र में से वचनों को जांचते रहे यह जानने के लिए कि जो पौलुस ने कहा वह सत्य है। जब उन्होंने पाया कि वह सत्य है तो उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया। *यीशु मसीह के अनुयायी होने के लिए यहूदी आरधनालय के इन सभी सदस्यों, स्त्री और पुरूषों ने यहूदी धर्म के अगुवों और उनके साथी देशवासी द्वारा सताव का जोखिम उठाया।* यह उन यहूदी और परमेश्वर का भय मानने वाले अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य था।

ग. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के बारे में दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं का सारांश

चर्चा करें। इन दृष्टातों के मुख्य संदेश और शिक्षाएँ क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *होना* और क्या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) **मुख्य संदेश।** इन दो दृष्टातों "छिपे खजानें" और "अनमोल मोती" का मुख्य संदेश निम्नलिखित हैः "परमेश्वर का राज्य इतना कीमती है कि एक व्यक्ति को परमेश्वर का राज्य प्राप्त करने के लिए सब कुछ देने के लिए तैयार रहना चाहिए (साथ ही जो भी उसे प्राप्त करने के बीच में आए)।" परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मूल्य जो भी इसे प्राप्त करने में हस्तक्षेप कर सकता है या जो इसके साथ असंगत हो सकता है उसे छोड़ देने के लिए तैयार रहना है। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के बीच में जो चीजें खड़ी हो सकती है वे हैं, किसी का घमंड, महत्वाकांक्षा, सम्पत्ति, रिश्ते या काम। यदि इनमें से कुछ भी बीच में खड़ा हो जाए तो उसे छोड़देना चाहिए (लूका 9:57-62; 14:25-33)! परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कोई आसान या हल्की बात नहीं है। लोगों के उद्धार की कीमत स्वयं परमेश्वर के एक मात्र पुत्र का जीवन है। इसलिए परमेश्वर के राज्य में मसीहियों का प्रवेश करना कोई हल्की बान नहीं हो सकती (मरकुस 8:31-38!)।

(2) **परमेश्वर के राज्य की खोज और उसमें प्रवेश करना ही मायने रखता है।** परमेश्वर के राज्य को खोजना ही मनुष्य की उच्चतम प्राथमिकता है (मत्ती 6:33)। "पहले उसके राज्य और धार्मिकता की खोज करों बाकि सारी वस्तुएँ तुम्हें आप ही मिल जाएंगी।"

फिर भी, इन दोनों दृष्टांतों के बीच अंतर है। "छिपे खजाने का दृष्टांत" *उन लोगों के लिए उद्धार की बहुमूल्यता पर* जोर देता है *जो इसे बिना खोजे पा लेते है और उसे प्राप्त कर लेते हैं!* और "अनमोल मोती का दृष्टांत" *उन लोगों के लिए उद्धार की बहुमूल्यता पर* जोर देता है *जो इसकी खोज में रहते हैं और इसे खोजने के बाद पा लेते हैं!* इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई परमेश्वर के राज्य या उद्धार को अकस्मात रूप से खोज लेता है या कोई इसकी तलाश में रह कर इसे प्राप्त करता है, महत्वपूर्ण बात है इसे स्वीकार करना!

यदि अब तक आप ने परमेश्वर के राज्य की खोज नहीं की तो अभी से उसकी खोज शुरू कर दें! यदि आप लंबे समय से परमेश्वर के राज्य की खोज कर रहे हैं तो उसमें अभी प्रवेश करें! "यीशु मसीह पर विश्वास करें, आप और आपका घराना उद्धार पाएगा।"! परमेश्वर का राज्य जो कुछ भी आप करते हैं या जो कुछ भी आपके पास है, उससे कहीं अधिक कीमती है। जिन लोगों को पता होता है कि खजाना कहाँ दबा है वे इसे सुरक्षित करने के लिए बाकि सब कुछ छोड़ देते हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना***

करें।

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर **"छिपे खजाने का दृष्टांत" और "अनमोल मोती का दृष्टांत"** का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2शमूएल 11,12,13 और 24** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(4) रोमियों 2:15।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 3:21-31।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।